Teacher's Name - Dr. Viveke Nand Sharma 22.04.2021
B.A. I (Hons.)

NATURE OF REMEMBERING

स्मरण से तात्पर्य एक ऐसी मानसिक प्रक्रिया से है जिसके द्वारा पूर्व अनुभवों या सीखी गई बातों को वापस वर्तमान चेतना में लाया जाता है। स्मरण के स्वरूप से सम्बन्धित मुख्य रूप से दो प्रकार के दृष्टिकोण मिलते हैं जिसमें Ebbinghaus (1885) तथा Bartlett (1932) का दृष्टिकोण काफी महत्वपूर्ण माना जाता है। Ebbinghaus ने 'Memory' नामक एक पुस्तक प्रकाशित की जिसमें इन्होंने स्मरण से सम्बन्धित प्रायोगिक अध्ययनों की विस्तृत चर्चा की है और स्मरण को एक Reproductive Process माना। Ebbinghaus ने स्मरण से सम्बन्धित अनेकों प्रयोगात्मक अध्ययन किये जिसके द्वारा इन्होंने यह दावा किया कि किसी विषय का Recall उसी रूप में संभव होता है जिस रूप में वह सीखा जाता है। उनका कहना है कि recalled material वास्तव में learned material की कार्बन कॉपी होती है। learned material तथा recalled material में मात्रात्मक अन्तर हो सकता है परन्तु गुणात्मक अन्तर नहीं। Ebbinghaus ने अपने ~~दृष्टिकोण~~ दृष्टिकोण की प्रमाणिकता को प्रमाणित करने के लिये मौखिक सामग्री पर प्रयोग किया। उन्होंने निरर्थक पदों (Nonsense Syllables) की सूचियों को शिक्षण सामग्री के रूप में चयन किया और अपने ऊपर ही प्रयोग किया। इन्होंने निरर्थक पदों की सूचियों को एक शुद्ध पुनरुत्पादक के तौर पर सीखने के बाद विभिन्न समय अन्तरालों पर उनके ~~स्मरण~~ धारण की जाँच की। उन्होंने देखा कि जिस रूप में निरर्थक पदों को याद किया था उसकी धारणा उसी रूप में पुनर्जीवित थी जिससे उन्हें उसी रूप में वापस लाना संभव हो सका। परन्तु ज्यों-ज्यों समय अन्तराल बढ़ता जाता, धारणा की मात्रा घटती गई और इसी तरह विस्मरण की मात्रा बढ़ती गई।

लेकिन Bartlett (1932) ने Ebbinghaus के स्मरण से सम्बन्धित विचारों को अस्वीकार करते हुए यह बताया कि स्मरण ~~Recalled~~ एक constructive Process है। उन्होंने यह दावा किया कि Recalled material learned material की कार्बन कॉपी नहीं है, Recall करते समय सीखे गये विषय में मात्रात्मक एवं गुणात्मक परिवर्तन होते हैं। उन्होंने Ebbinghaus के दृष्टिकोण की आलोचना की और कहा कि Ebbinghaus के प्रयोग में अनेकों त्रुटियाँ थीं जिसके कारण उनका प्रयोग परिणाम दोषपूर्ण हो गया। ये दोष या त्रुटियाँ निम्नांकित हैं:-

(1) Ebbinghaus ने निरर्थक पदों पर प्रयोग किया जो बहुत ही कृत्रिम था। निरर्थक पदों के Recall में गुणात्मक परिवर्तन की संभावना नहीं रहती है। यदि वे सार्थक सामग्री पर प्रयोग किये हुए होते तो उनका परिणाम ऐसा नहीं आता।

SHOT ON REDMI Y3
AI DUAL CAMERA

(2)

② Ebbinghaus ने अपने अध्ययन में पुनः अधिगम विधि को धारण. मापक के रूप में उपयोग किया जो स्वाभाविक जीवन से काफी हटकर भिन्न है,

③ Ebbinghaus का ऐसा विश्वास है कि धारणा या स्मृति-चिह्न सही मात्रा में जानी जाती जब प्रयोज्य सीखे गये पदों को ठीक उसी क्रम में पुनः स्मरण करता है जिस क्रम में उसने उन्हें सीखा है। परन्तु यह विश्वास दोषपूर्ण है,

④ Ebbinghaus ने स्वयं प्रयोज्य तथा प्रयोगकर्ता दोनों का काम किया जो स्वाभाविक नहीं है, इस प्रकार भी उनके दृष्टिकोण की विश्वसनीयता घट जाती है,

Bartlett ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि Ebbinghaus के प्रयोग में ये सारे दोष नहीं होते तो वे गलत निष्कर्ष पर नहीं पहुँचते और वे स्मरण को Reproductive Process नहीं मानते। Bartlett ने स्मरण से सम्बन्धित अपने दृष्टिकोण को 'Remembering' नामक पुस्तक में प्रकाशित किया जिसमें स्मरण से सम्बन्धित अनेकों प्रयोगात्मक अध्ययन तथा अपना विचार प्रस्तुत किया। Bartlett ने अपने दृष्टिकोण की पुष्टि के लिए दो प्रकार के प्रयोग किए जिनमें कहानी सम्बन्धी प्रयोग तथा चित्र सम्बन्धी प्रयोग प्रमुख है। इन्होंने अपने प्रयोग में तीन विधियों का उपयोग किया, Serial Reproduction Method, Successive Reproduction Method तथा Single Reproduction Method का उपयोग किया। Bartlett ने इन तीन विधियों के सहारे देशी कहानियों के स्मरण का अध्ययन किया। कहानियों में कुछ अलौकिक बातें दी जाती थी। एक कहानी थी - भूतों की लड़ाई जिसे प्रयोज्यों ने दो बार पढ़ा और Successive Reproduction Method से विभिन्न समय अन्तरालों पर उनके स्मरण की जाँच की गई। स्मरण की जाँच विभिन्न समय अन्तरालों में 15 मिनट से लेकर 2½ वर्षों तक की। जब कहानी का recall 15 मिनट बाद किया गया तो उसमें कई बातें जुड़ी हुई थी जो पश्चिमी सांस्कृतिक आदतों के अनुरूप थे, अलौकिक तत्वों को हटा दिया गया था और अर्थपूर्ण पदों को उभार दिया गया था। उसी व्यक्ति ने उसी कहानी को दो महीने बाद दुहराया तो कुछ और परिवर्तन हुए जिससे कहानी सांस्कृतिक आदतों के अनुरूप हो गई। जब उसी व्यक्ति को 2½ वर्षों के बाद जाँचा गया तो कहानी का रूप बिल्कुल ही बदल गया। इस तरह कहानियों के Reproduction के आधार पर उसकी विशेषताएँ पायी गई जो निम्नांकित हैं। (Hulse, Egeth & Deese, 1980):

① कहानी के पढ़ने तथा उसके Reproduction का अन्तराल जितना बढ़ता गया कहानी उतनी छोटी होती गई और उसके प्रारूप में भी परिवर्तन होता गया।

② कहानी की भाषा बदलकर सामान्य हो गई और अपरिचित संज्ञाओं के स्थान पर जानी-पहचानी संज्ञा के रूप में स्मरण किया गया।

③ कहानी को सुसंगठित बनाने के लिए उसके कठिन अंशों को हटाकर नई घटनाएँ जोड़ दी गई और घटनाक्रम में भी परिवर्तन कर दिया गया।

अपने अध्ययन परिणामों के आधार पर Bartlett ने यह निष्कर्ष निकाला कि Recall करते समय व्यक्ति learned material के विस्तृत वर्णन को छोड़ देता है। मुख्य बातें रह जाती हैं और विस्तृत वर्णन बदल जाते हैं। यह भी देखा गया है कि Recall करते समय व्यक्ति सीखे गये विषय को छोटा तथा आकर्षक बनाने का प्रयास करता है। वह कुछ बातों को छोड़ देता है और कुछ नई बातों को जोड़ देता है। इस संक्षिप्त विवरण से यह भी स्पष्ट होता है कि व्यक्ति के Recall पर उसकी आवश्यकता, अभिरुचि, मनोवृत्ति आदि का प्रभाव पड़ता है। यह भी देखा गया है कि अध्ययन सामग्री में Recall के समय अनेक परिवर्तनों के बावजूद उसकी केन्द्रीय (मूल) विषय-वस्तु नहीं बदलती है अर्थात् Schema में परिवर्तन नहीं होता है। इस प्रकार Bartlett ने यह स्पष्ट किया कि स्मरण एक रचनात्मक मानसिक प्रक्रिया है। उनके शब्दों में — "The exact reproduction of learned material is a rare exception."

इस सम्बन्ध में Hulse, Egeth & Deese (1980) ने भी कहा है — "Bartlett proposed that what is remembered not only determined by the stimulus materials themselves but by preexistent, active, organised settings that he called Schemas... A Schema is a plan or general point of view with all of the details left out. Bartlett argues that preexisting schemas influence a person's perception of complex events and memories for that event."

Bartlett के विचारों का समर्थन अनेक अध्ययन परिणामों द्वारा भी होता है। Carmichael, Hogan & Walter (1932) ने अपने अध्ययन के आधार पर यह बताया कि प्रयोज्य के समक्ष चित्रों के प्रस्तुत करने के साथ यदि उसे नाम दे दिया जाता है तो इससे उसका स्मरण प्रभावित होता है।

इस तरह Bartlett के अध्ययन के निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि स्मरण एक Constructive mental process है। लेकिन हाल में कुछ ऐसे अध्ययन हुए हैं जिनसे यह स्पष्ट हो जाता है कि प्रयोज्यों ने कहानी का सही-सही Recall किया (Brockway et al., 1974; Zangwill, 1972)।

इस तरह स्मृति या स्मरण के स्वरूप से संबंधित यह विवाद बना हुआ है कि स्मरण एक Constructive process के साथ-साथ Reproductive process कैसे हो सकता है। इस प्रकार का सुझाव Hasher & Griffin (1978) ने देते हुए कहा कि किसी नई जटिल वाचिक सामग्री को पढ़कर या सुनकर ही व्यक्ति धारणाएँ अर्जित करता है, यहाँ पर प्रयोज्य को दिये गए निर्देश के अनुसार यह तय होता है कि वह अर्जित धारणाओं को हू-ब-हू produce करता है या reconstruct करके प्रस्तुत करता है। इस तरह स्मरण पुनरुत्पादक के साथ-साथ रचनात्मक प्रक्रिया भी है।

——— × ——— × ———